ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No.1, Jan. – March, 2026/22

गुरुकुल प्रणाली : भारत की प्राचीन शिक्षा परम्परा

रुची शुक्ला एवं आरती गुप्ता

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i1.263

शोध सारांश

गुरुकुल का उदय प्राचीनकाल से माना जाता हैं। जब शिक्षा प्राप्त करने से किसी भी व्यक्ति में जाति व धर्म का भेदभाव नहीं होता था। प्रत्येक मनुष्य जो शिक्षा प्राप्त करना चाहता था, उसे शिक्षा से विहीन नहीं रखा जाता था। व्यक्ति को जीवन यापन की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरुप शिक्षा दी जाती थी तथा शिक्षा का स्वरुप मौखिक होता था। शिक्षा का पाठ्यक्रम था, जैसे वेद, उपनिषद, व्याकरण, साहित्य, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत, कला, शिल्पकला, कृषि आदि। शिक्षा प्रदान करने के लिये आचार्य होते थे, जिन्हे शिक्षा पूर्ण हो जाने पर दक्षिणा दी जाती थी। शिक्षा प्रदान कराने से पहले उपनयन संस्कार होता था, जिसके बाद विद्या आरंभ होती थी। रामायण और महाभारत में भी इसका वर्णन देखने को मिलता है। वैदिक शिक्षा प्रणाली में भी कुछ ऐसे तत्व विद्यमान है, जो गुरुकुल प्रणाली को बहुत उपयोगी मानते है। भारतीय इतिहास में विभिन्न राजाओं और उनके परिजनों ने भी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने गुरुजनों का मान बढाया है। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत गुरुकुल की इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की जाएगी।

शोध पत्र

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण आधार गुरुकुल व्यवस्था रही। यह केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं था, बल्कि यह चरित्र –निर्माण अनुशासन और आध्यात्मिक उन्नति का केन्द्र था। आज समय में जब शिक्षा का स्वरुप मुख्यतः रोजगार प्राप्त करने तक सीमित हो गया हैं। गुरुकुल प्रणाली हमें यह स्पष्ट कराती हैं, कि शिक्षा का उद्देश्य केवल 'जीविका' नही बल्कि 'जीवन' का निर्माण हैं।

गुरुकुल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, गुरु और कुल। इसका अर्थ है– गुरु का निवास या आश्रम, जहाँ विद्यार्थी रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह प्रणाली वैदिक काल से प्रचलित थी, और समय के साथ महाकाव्यों, पुराणों और स्मृतियों में इसका विस्तार से वर्णन मिलता है। गुरुकुल में शिक्षा का उद्देश्य केवल वेद या शास्त्रो का ज्ञान नहीं था, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना भी था। विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर उनकी सेवा करते हुए जीवन के सभी शारीरिक, मानसिक, बौध्दिक, नैतिक, और आध्यात्मिक गुणों को आत्मसात करते थे। गुरुकुल में व्यक्ति को उसके संपूर्ण जीवन के क्रियाकलापों को करने के लिए उपयुक्त शिक्षा दी जाती थी, जिससे व्यक्ति उचित निर्णय ले पाता था।

- शोध छात्रा –एम. ए. समेस्टर, IV (इतिहास), महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ़ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, लखनऊ
- शोध पर्यवेक्षक – सहायक आचार्य, महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ़ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, लखनऊ

शिक्षा ही मनुष्य में विनय का भाव उत्पन्न करती है जिससे किसी भी कार्य के लिए उसमें पात्रता आती है।

विद्या दक्षति विनयं विनयाद याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद धर्म तत : सुखम् ।।

–हितोपदेश

ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि :

ऋग्वैदिक काल (1500–1000ई०पू०) में शिक्षा मुख्यत : मौखिक परम्परा से दी जाती थी। विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहते और वेद, उपनिषद ,व्याकरण, गणित, ज्योतिष, धनुर्वेद, आयुर्वेद आदि विषयों की शिक्षा प्राप्त करते थे।

शिक्षा का यह स्वरुप सर्वांगीण विकास पर आधारित था। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भी गुरुकुल का उल्लेख मिलता है, जैसे ऋषि वशिष्ठ, ऋषि विश्वामित्र एवं द्वोणाचार्य के आश्रम आदि। इनमें शिक्षा जाति और धन के भेदभाव से मुक्त थी। गुरु का सर्वोच्च स्थान था।

गुरूर्ब्रहमा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वर :।
गुरू : साक्षात परं ब्रहम तरमै श्रीगुरवे नम : ।।

– स्कन्दपुराण

गुरु को परमेश्वर के समान माना जाता था। शास्त्रों में गुरु को माता–पिता से भी ऊच्च स्थान दिया गया है, क्योंकि वही विद्यार्थी को सच्चे ज्ञान और मोक्ष का मार्ग दिखाते थे। गुरु के बिना शिक्षा संस्कार और समाज का निर्माण संभव नहीं था।

गुरुकुल जीवन की मुख्य विशेषताएँ :

आवासीय शिक्षा – विद्यार्थी गुरु के साथ उनके आश्रम में रहते थे, वहीं वह शिक्षा प्राप्ति के साथ–साथ गुरु और गुरु माता की सेवा भी करते थे जिससे गुरु शिष्य संबंध अत्यंत धनिष्ठ होता था।

अनुशासन और सेवा – गुरु की सेवा शिक्षा का अनिवार्य अंग थी। विद्यार्थी अनेक प्रकार के कार्य भी करते थे, जैसे लकडी लाना ,आश्रम की सफाई करना तथा भोजन की व्यवस्था में भी सहयोग किया करते थे। इससे उनमे आत्मनिर्भरता का गुण आता था।

सर्वांगिण विकास – शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी अपितु शारीरिक व्यायाम, युध्दकला, संगीत, शिल्पकला, कृषि, पशुपालन आदि का भी प्रशिक्षण मिलता था, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए उपयोगी होता था।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा –वेदों का अध्ययन शिक्षा का प्रमुख पहलू था जिसके साथ ही साथ नैतिक आचरण, सत्य, अहिंसा, संयम और आत्मसंयम पर विशेष बल दिया जाता था।

मौखिक परम्परा– ग्रंथों को स्मरण करने के लिए श्रुति और स्मृति पध्दति का प्रयोग किया जाता था, जिससे ज्ञान की शुद्धता बनी रहती थी और स्मरण करने में भी आसानी होती थी।

गुरो : आदेशात् शिष्य : सर्व कुर्यात् समहित : ।
न हि गुरूप्रसादेन शिध्दिं याति कथन्चन ।।

– नैतिक उपदेश

शिष्य को गुरु की आज्ञा का पालन पूर्ण श्रध्दा और समर्पण से करना चाहिए, क्योकि गुरु की प्रसन्नता के बिना कोई सफलता संभव नही हैं।

गुरुकुल के नियम :

प्राप्तः ब्रह्ममुहूर्त में उठना, स्नान करके वेदपाठ करने के उपरांत यज्ञ और शास्त्र अध्ययन करना, गुरुकुल में गुरु की आज्ञा का पालन करना, आत्मसंयम और सत्य का पालन करना, आश्रम के विभिन्न कार्यो में भाग लेना तथा सहपाठियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना गुरुकुल के मुख्य नियमों में समलित थे। गुरुकुल के नियमों का सत्य तथा पूर्ण निष्ठा के साथ वहन करना एक शिष्य का परंम कर्तव्य होना चाहिए।

गुरु शिष्य संबंध :

भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य संबंध सबसे पवित्र और अनूठा माना गया है। गुरु और शिष्य का यह संबंध पिता और पुत्र जैसा होता था। शिष्य गुरु कि सेवा में कोई कमी नहीं छोडते थे और गुरू अपने शिष्यों के भविष्य निर्माण के साथ जीवन निर्माण का मार्गदर्शन भी करते थे। गुरु शिष्य को केवल विद्या ही नहीं अपितु धर्म, नीति, आचरण और समाज सेवा की शिक्षा देने में भी पूर्णरूपेण समर्पित थे।

रामायण और महाभारत में गुरुकुल :

रामायण में श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की। वहाँ उन्होंने वेद–शास्त्र, धनुर्वेद, राजनीति और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया। गुरुकुल में न केवल ग्रन्थों का ज्ञान दिया जाता था बल्कि युध्दकला, रणनीति और राज्य संचालन की भी शिक्षा दी जाती थी।

गुरूशुश्रूषणे युक्त : सत्कारे चापि नित्यश : ।
अध्ययनाभ्यसे वापि धर्मे च नियमस्थिता : ।।

– मनुस्मृति

रामायण में वर्णन हैं कि श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने गुरुकुल में रहते हुए अपने गुरु वशिष्ठ की सेवा, गुरुजनों का सत्कार तथा अध्ययन में परिश्रम के साथ धर्म के नियमों का पालन पूर्ण निष्ठा से किया करते थे।

"यथा गुरूवच : शिष्य : नातिवर्तेत कर्हिचित ।
गुरो : आदेशानुगत श्रेय एवानुपालयेत् ।।"

– नीतिशतकम्

शिष्य को कभी भी गुरु के वचनों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। गुरु की आज्ञा का पालन करना ही कल्याण का मार्ग है। यह श्रीराम जी ने सिध्द करके दिखाया है। महर्षि विश्वामित्र के मार्गदर्शन में श्रीराम ने ताड़का और मारीच, सुबाहु जैसे राक्षसों का वध किया, जो गुरुकुल में सीखे गए शौर्य और धर्मपालन के उदाहरण है। महाभारत में कौरव और पाण्डवों ने गुरु द्वोणाचार्य के आश्रम में शिक्षा ली यहाँ, उन्होने धनुर्विद्या, युध्दकला रथ संचालन, गदायुध्द, तलवारबाजी और नीतिशास्त्र सीखे।

आचार्यदेवो विद्या नाम शास्त्रविज्ञानमेव च ।
गुरोर्दत्तं हि यत्सर्वं न तदन्येन लभ्यते ।।

– सूक्ति

शास्त्र और शस्त्र का सच्चा ज्ञान केवल गुरु से ही मिलता है। गुरु से प्राप्त ज्ञान अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है। अर्जुन का श्रेष्ठ धनुर्धर बनना, भीम की गदा तथा युध्द में कुशलता आदि सभी गुरुकुल शिक्षा के प्रभाव का प्रमाण हैं।

गुरुकुल में प्रवेश :

गुरुकुल में प्रवेश सामान्यतः उपनयन संस्कार के बाद होता था यह जिसे यज्ञोपवीत संस्कार भी कहा गया है। यह संस्कार 8 वर्ष की आयु में ब्राह्मणों में, 11 वर्ष की आयु में क्षत्रियों में 12 वर्ष की आयु में वैश्यों के लिए किया जाता था, जिसमें उन्हें जनेऊ पहनाने के बाद दीक्षा दी जाती थी।

गुरुकुल पाठ्यक्रम :

गुरुकुल में पढाए जाने वाले विषय अत्यंत व्यापक थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं थी बल्कि जीवन के हर पहलू को छूता था। इसका उद्देश्य शिष्य का सर्वांगीण विकास करना था।

धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा : इसमें वेद, उपनिषद, पुराण तथा दार्शनिक ज्ञान के साथ–साथ मन्त्रों का उच्चारण करके उनको स्मरण करना, संहिता पाठ, योग ध्यान और प्रार्थना आदि की शिक्षा दी जाती थी।

नैतिक और चारित्रिक शिक्षा : गुरु की आज्ञा का पालन करना, अनुशासन में रहकर सादा जीवन व्यतीत करना, सत्य, अहिंसा, करुणा और परोपकार की शिक्षा के साथ धर्म और नीति की शिक्षा का पालन करना शिष्य का परम कर्तव्य था।

बौध्दिक शिक्षा :इसमें छह वेदाँग (विषय) होते थे, जो इस प्रकार है –

शिक्षा – उच्चारण और स्वर
व्याकरण – भाषा और संस्कृत व्याकरण छंद रचना नाटय
निरूक्त – शब्दों का अर्थ
कल्य – विधि – विधान
छन्द – कविता और छन्द रचना
ज्योतिष – गणित, समय– मापन, खगोल अध्ययन, तर्कशास्त्र, दर्शन, साहित्य और काव्य ।

व्यवहारिक एंव कौशल शिक्षा : धनुर्विद्या, अस्त्र–शस्त्र प्रशिक्षण, युध्दकला, व्यायाम, कृषि–पशुपालन, ग्राम्य की शिक्षा, शिल्पकला, और हस्तकला निमार्ण आदि थें।

जीवनोपयोगी शिक्षा : अत्मनिर्भर बनने की कला (स्वंय भोजन बनाना, लकडी लाना ,पानी भरना आदि) सामूहिक जीवन और सहयोग की भावना, प्रकृति से जुडाव (वन और आश्रव जीवन) ये सभी गुण गुरुकुल शिक्षा की प्रमुख विषेशताएँ थी।

परीक्षा और मूल्यांकन : गुरुकुल में लिखित परीक्षा नहीं होती थी। शिष्य की जीवन–शैली आचरण और ज्ञान प्रयोग से उसकी योग्यता मापी जाती थी। विदाई के समय समावर्तन संस्कार होता था जिसमें शिष्य गुरु को गुरु दक्षिणा देता था।

न मातृनापि पित्रो : नापि चान्यस्य कस्यति ।
गुरोरून्तरमरत्यंक तस्मात्सर्वप्रयत्नत : ।।

– ब्रहमवैवर्त पुराण

अर्थात् न तो माता, न पिता और न ही अन्य किसी का ऋण इतना बड़ा है जितना गुरु का। इसलिए गुरु के प्रति आभार व्यक्त करना सबसे बड़ा कर्तव्य है।

गुरु दक्षिणा : गुरुकुल प्रणाली में गुरु दक्षिणा का अत्यधिक महत्व था। यह केवल एक परम्परा नहीं बल्कि शिष्य की गुरु के प्रति श्रध्दा समर्पण और कृतज्ञता का प्रतीक थी। गुरु दक्षिणा के माध्यम से शिष्य अपने गुरु के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करता था।

गुरु दक्षिणा का महत्व : गुरु दक्षिणा शिष्य की गुरू के प्रति श्रध्दा, निष्ठा एवं समर्पण का प्रतीक मानी जाती थी जिसका वह विद्या प्राप्ति के दौरान पूर्ण निष्ठा से पालन करना था।

गुरु का सम्मान सर्वोपरि माना जाता है जिसकी पुष्टि वेदों और उपनिषदो से होती है। यह परम्परा गुरु के सम्मान और उनके योगदान की सराहना करती है। गुरु दक्षिणा के माध्यम से शिष्य आध्यत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता था जिससे उसे उसके जीवन का मूल स्रोत का ज्ञान प्राप्त होता था। गुरु दक्षिणा के महत्व को रामायण और महाभारत काल के उदाहरण स्पष्ट करते है – रामायण में श्रीराम और उनके भाइयों ने महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की और गुरुदक्षिणा के रूप में उनकी सेवा की। महाभारत में एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य से बिना दीक्षा लिए ही धनुर्विद्या सीखी और जब गुरु ने उनसे गुरुदक्षिणा में उसका अँगूठा माँगा तो एकलव्य ने विना सोचे ही अपने गुरु को दाहिने हाथ का अँगूठा अर्पित कर दिया। यह उनकी गुरु के प्रति श्रध्दा और समर्पण को दर्शाता है।

गुरुकुल की आर्थिक व्यवस्था :

गुरुकुल आमतौर पर दान और समाज से प्राप्त सहयोग से चलते थे। विद्यार्थियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था शिक्षा पूरी करने बाद शिष्य अपने गुरु को गुरुदक्षिणा देता था तथा शिष्य भी गुरु की विभिन्न प्रकार से सहायता किया करते थे जिससे भेाजन आदि की व्यवस्था हो जाया करती थी।

गुरुकुल का सामाजिक योगदान :

समाज मे नैतिकता और सेवा भावना का विकास करना, विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने का ज्ञान प्रदान करना, गुरु और शिष्य के बीच आजीवन एक पवित्र व अटूट संबंध तथा एक अच्छे चरित्र व जीवन निर्माण की शिक्षा का ज्ञान प्रदान करना आदि के माध्यम से गुरुकुल सामाजिक योगदान में सहायक थे।

गुरुकुल केवल अध्ययन का केंद्र नही था, बल्कि यह चरित्र निर्माण और समाज सेवा का केंद्र था। यहाँ से निकले विद्यार्थी समाज में राजा, मंत्री, शिक्षक, वैद्य और योध्दा बनकर योगदान देते थे। रामायण और महाभारत के कई नायक जैसे – राम, लक्ष्मण, अर्जुन, भीष्म आदि गुरुकुल शिक्षा के आर्दश उदाहण हैं। गुरुकुल प्रणाली ने भारत में ऐसे वीर, ज्ञानी और धर्मनिष्ठ व्यक्तियों का निर्माण किया जिन्होंने समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन किया । यह प्रणाली केवल ज्ञान ही नहीं देती थी, बल्कि जीवन जीने का सही तरीका भी सिखाती थी।

गुरुकुल के लाभ : गुरुकुल के निम्न लाभ थे –

- **समग्र विकास –** मानसिक , शारीरिक , आध्यात्मिक विकास पर बल देना।
- **व्यक्तित्व निर्माण –** चरित्र और जीवन निर्माण , उच्च व्यक्तित्व के साथ नैतिकता पर बल दिया जाता था।

- **समानता** – सभी शिष्य एक साथ रहते थे, जाति और धन का भेदभाव नहीं था। सभी एक–दूसरे से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते थे। तथा साथ में विद्याध्ययन करते थे तथा ईमानदारी से गुरु की सेवा में समर्पित थे तथा ऊँच–नीच का कोई भेदभाव नही था।

आधुनिक समय में गुरुकुल का पुनर्जीवन :

आज भी कई संस्थाएँ गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही हैं, जिनमें चिन्मय मिशन गुरुकुल, आर्य समाज के वेद विद्यालय तथा स्वामी नारायण गुरुकुल मुख्य हैं। वर्तमान में चल रहे आधुनिक गुरुकुल जो गुरुकुल को पुनर्जीवित रखने के प्रेणास्त्रोत हैं। और पारंपरिक शिक्षा के साथ आधुनिक तकनीक का संयोजन भी करते हैं। गुरुकुल के सिद्धांतों का व्यक्ति के चारित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान हैं। गुरुकुल की पध्दति को आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था के साथ जोड़कर फिर से जीवित किया जा सकता है। यह स्वरुप आधुनिक तकनीक और नैतिक शिक्षा का संतुलन देता है।

यद्यपि आज का युग तकनीकी डिजिटल युग है, फिर भी गुरुकुल प्रणाली के कई सिद्धांत आज भी उपयोगी हैं। शिक्षा, का उद्देश्य केवल आजीविका नहीं बल्कि व्यक्तित्व का विकास करना होना चाहिए। नैतिक शिक्षा, अनुशासन और सेवा भाव को पुनः शिक्षा का अंग बनाना चाहिए। प्रकृति के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करने से शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता हैं। और सरल जीवन जीने की मानसिकता का विकास होता है । शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विश्वास, आदर और सम्मान का अटूट संबंध स्थापित होता है।

अधुनिक शिक्षा और गुरुकुल प्रणाली

पहलू	गुरुकुल प्रणाली	आधुनिक शिक्षा
स्थान	प्रकृति के बीच	शहर और भवनों में
पद्धति	मौखिक और व्यवहारिक	पुस्तक और तकनीकी आधारित
उद्देश्य	चरित्र निर्माण	करियर और रोजगार
विषय	आध्यात्मिक, सांसारिक	मुख्यतः सांसारिक
अनुशासन	कठोर नियम पालन	अपेक्षाकृत स्वतंत्र
गुरु–शिष्य संबंध	परिवार जैसा	औपचारिक

• गुरुकुल मे शिक्षा नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा में व्यवसायिक और तकनीकी ज्ञान पर बल दिया गया है। गुरुकुल में शिक्षा गुरु–शिष्य के व्यक्तिगत संबंध पर आधारित थी, जबकि अधुनिक शिक्षा में संस्थान और औपचारिक परीक्षाओं पर निर्भर है।

• गुरुकुल प्रणाली नैतिक मूल्यों आत्म संयम और चरित्र निर्माण पर बल देती थी, जबकि आधुनिक शिक्षा का केंद्र बिंदु प्रतियोगिता और व्यवसायिकता है। इस प्रकार कहा जा सकता हैं। जहाँ गुरुकुल शिक्षा जीवन को अध्यात्मिक दृष्टि से सक्षम बनाती है वही आज की आवश्यकता यह हैं। कि इन दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ गुणों का समन्वय करके एक संतुलित शिक्षा व्यवस्था तैयार की जाए। प्राचीन भारत

में आए ह्वेनसांग, फाह्यान जैसे चीनी यात्री गुरुकुल प्रणाली के अनुशासन और उच्च नैतिक मानकों से प्रभावित थे, उन्होने लिखा है कि भारत में शिक्षा का उद्देश्य विद्या के साथ धर्म का पालन था।

निष्कर्ष :

गुरुकुल प्रणाली ने भारत की संस्कृति और सभ्यता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा हमें आज भी अनुशासन, सेवा, आत्मनिर्भता और गुरु–शिष्य संबंध जैसे मूल्यों से जोड़े रखा, जो आधुनिक समय में विशेष महत्वपूर्ण है। गुरुकुल प्रणाली भारतीय संस्कृति की रीढ़ थी। जिसनें पीढ़ियों तक समाज को ज्ञान संस्कार और शिक्षा दी। आधुनिक शिक्षा में भले ही तकनीकी विषयों का विस्तार हुआ हो परंतु गुरुकुल की जीवनमूल्य आधारित शिक्षा आज भी प्रेरणादायक हैं। यह केवल शिक्षा देने का केंद्र नहीं अपितु एक जीवनशैली थी, जिसने भारत को विश्वगुरु बनाया। इसने समाज को ऐसे व्यक्तित्व दिए जिनमें ज्ञान, चरित्र अनुशासन और सेवा भाव था। रामायण और महाभारत में वर्णित आदर्श चरित्र इसके उत्तम उदाहरण हैं। आज जब शिक्षा अधिकतर डिग्री और नौकरी तक सीमित हैं। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि एक अच्छा व्यक्ति भी शिक्षा का उतना ही महत्वपूर्ण अंग है। आज के समय में यदि हम आधुनिक शिाक्षा में गुरुकुल के कुछ तत्व जैसे, चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा और गुरु–शिष्य संबंध आदि जोड़ दें तो शिक्षा और भी प्रभावशाली बन सकती हैं।

सन्दर्भ :

- अल्टेकर ए. एस., प्राचीन भारत में शिक्षा, 1944, पृष्ठ, 12
- साहाना सिंह, The Educational Haritage of Ancient India, 2017, पृष्ठ, 5
- हितोपदेश, मित्रलाभ (प्रथम उपदेश), संस्कृत शिक्षण मंडल जयपुर संस्करण, पृष्ठ, 25
- साहाना सिंह, The Educational Haritage of Ancient India, 2017, पृष्ठ, 22
- गुरुगीता (स्कन्दपुराण, उत्तराखण्ड, अध्याय 6) गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण, पृष्ठ 9
- अल्टेकर ए. एस., प्राचीन भारत में शिक्षा, पृष्ट, 87
- शार्मा, भारतीय शिक्षा इतिहास, पृष्ठ, 19
- छांदोग्य उपनिषद 4.9 (गीता प्रेस संस्करण पृष्ठ, 134–136
- बाल काण्ड सर्ग 34–35
- आदिपर्व, अध्याय 131–133
- वेदांत शास्त्र मनुस्मृति टीका, पृष्ठ, 78

- **रुची शुक्ला ईमेल ansh06142@gmail.com**
- **डॉ. आरती गुप्ता, ईमेल artiofficialfeb29@gmail.com**